मसीह दज्जाल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर। व बअद –

दज्जाल का क़ैद से निकलना भी क़यामत से पहले की दस बड़ी निशानियों में से एक है। यह अपने साथ बहुत बड़े फित्ने व शुब्हात ले कर आएगा। इसीलिए आप सल्ल. ने इसके बारे में उम्मत को ख़बरदार किया और डराया और फ़रमाया ''अल्लाह की क़सम! क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक तीस झूठे न ज़ाहिर हो जाएं। उनमें सबसे आखिरी काना दज्जाल होगा।'' (अहमद)

दज्जाल कौन है ?

दज्जाल औलादे आदम में से एक शख्स होगा। जिसे अल्लाह कुछ ऐसी ताकतें अता करेगा जो उसके सिवा किसी इन्सान को हासिल न हुई। उसे मिली यह ताकतें लोगों की आज़माइश के लिए होंगी। वह यह दावा भी करेगा कि वही रब्बुल आलमीन है। उसकी बाई आख मिटी हुई होगी यानी वह काना होगा। कुछ अहले इल्म के नज़दीक उसे 'मसीह' इसलिए कहा गया है वह सारी ज़मीन में घूमेगा व चलेगा फिरेगा। उसका काम दज्ल व फ़रेब करना, बहाने बनाना, हक़ाइक को छिपाना और बड़े–बड़े झूठ बोलना होगा। वह लोगों से उस पर ईमान लाने को कहेगा। इसीलिए आप सल्ल. ने उसकी पहचान बताते हुए फ़रमाया ''दज्जाल काना है और तुम्हारा रब काना नहीं है। (वह हर ऐब से पाक है) (बुखारी–7131)

इब्ने सय्याद का किस्सा –

आप सल्ल. के ज़माने में मदीना में ''इब्ने सय्याद' नाम का एक यहूदी लड़का था। आप सल्ल. को उसके दज्जाल होने के बारे में शक था। इसीलिए एक दफ़ा आप सल्ल. ने उससे फ़रमाया ''क्या तू गवाही देता है कि मैं (मुहम्मद) अल्लाह का रसूल हूं। वह आप की तरफ देखकर बोला–मैं गवाही देता हूं कि आप उम्मीईन (अनपढ़ लोगों) की तरफ रसूल बना कर भेजे गए हैं। फिर उसने कहा कि क्या आप (सल्ल.) गवाही देते हैं कि मैं अलाह का रसूल हूं। आप सल्ल. ने उसकी रिसालत का इन्कार किया और फ़रमाया'' मैं अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाता हूं।'' फिर आपने इब्ने सय्याद से पूछा कि ''तुझे क्या नज़र आता है ? उसने बताया कि मेरे पास सच्चा और झूठा आता है। तब आप सल्ल. ने उससे फरमाया

मैने तेरे लिए दिल में एक चीज़ छिपा रखी है।'' इब्ने सय्याद ने दुखान कहने की भरपूर कोशिश की लेकिन यह लफ़्ज़ अदा करने की उसे तौफ़ीक़ न मिली। वह सिर्फ दुख–दुख ही कह सका। आप सल्ल. ने फ़रमाया ''फटकार है तुझपर! तू अपनी हैसियत से आगे न बढ़ सकेगा।'' हज़रत उमर रजि. ने अर्ज किया कि मुझे इजाजत दीजिए कि मैं इसकी गर्दन उड़ा दूं।'' आप सल्ल. ने फरमाया इसे छोड़ दो अगर यही दज्जाल है तो तुम इसे नहीं मार सकोगे और अगर यह दज्जाल नहीं है तो इसे क़त्ल करने से कोई फायदा नहीं है। (मुस्लिम–7344, अहमद–11798)

अबु सईद खुदरी रजि. का बयान हे कि ''एक सफ़र में जब इब्ने सय्याद उनके साथ था उसने कहा अबु सईद लोग मेरे बारे में जो बाते करते हैं उस पर मेरा दिल चाहता है कि किसी पेड़ से रस्सी लटका कर खुद को फांसी दे लूं। हो सकता है कि (दज्जाल के बारे में) आप सल्ल. की हदीस का इल्म किसी और को न हो मगर तुम अन्सार से छिपी नहीं है। क्या अल्लाह के रसूल ने यह नहीं फरमाया था कि दज्जाल बांझ होगा? उसके कोई औलाद न होगी जबकि मैं औलाद वाला हूं और मेरी औलाद मदीना में मौजूद है। दज्जाल मक्का व मदीना में दाखिल न हो सकेगा जबकि मैं मदीना से आ रहा हूं और मक्का जा रहा हूं। अबु सईद रजि. कहते हैं कि मैं उसे माजूर मानने ही वाला था कि वह फिर बोला अल्लाह की क़सम मैं अच्छी तरह जानता हूं कि दज्जाल कहां पैदा हुआ ? और इस वक़्त वह कहां है ? अबू सईद रजि. कहते हैं मैने कहा तुम्हारे लिए हलाकत व बर्बादी हो। (मुस्लिम 7350 अहमद 11945)

दज्जाल सबसे बड़ा फितना

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया–

1. आदम अलैहि. की पैदाइश से लेकर क़यामत के दिन तक दज्जाल से बड़ी कोई मुसीबत नहीं। (मुस्लिम–7395)

2. दज्जाल के अलावा दूसरे फ़ित्नों का तुम्हारे बारे में मुझे ज़्यादा डर है। दज्जाल अगर मेरी ज़िन्दगी में निकल आया तो मैं दलील के ज़रिये मुक़ाबला करके तुम सब की तरफ़ से उस पर भारी पड़ूगा और अगर वह मेरे बाद आया तो हर शख़्स दलील के साथ उस पर ग़ालिब आने की कोशिश करे। अल्लाह हर मुस्लिम की मदद करेगा। (मुस्लिम–7373, इब्ने माजा–4077)

3. मैं तुमको उससे डरा रहा हूं। हर नबी ने अपनी क़ौम को उससे डराया है लेकिन मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताता हूं जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बतलाई। वह यह कि दज्जाल एक आंख से काना होगा और अल्लाहतआला ऐसा नहीं है। (बुखारी–7127, इब्ने माजा–4077)

ख़ुरुजे दज्जाल से पहले होने वाल वाक़िआत

1. बैतुल मक़्दिस के आबाद होने से मदीना की बर्बादी शुरु हो जाएगी।

मदीना बर्बाद हुआ हुआ तो कुस्तुनतुनया फ़त्ह हो हो जाएगा और इसके फ़त्ह होने के बाद जल्दी ही दज्जाल निकल आएगा। (अबु दाऊद–4294)

2. तुम ईसाईयों के साथ सुलह कर लोगे। फिर एक जंग के बाद रोमी तुम से ग़द्दारी करेगें मगर तुम्हे जीत हासिल होगी। मालेग़नीमत मिलेगा और तुम नुक़सान से बचे रहोगे। (अबु दाऊद 4292)

3. खुरुजे दज्जाल से पहले के तीन साल बहुत सख्ती भरे होगे। पहले साल 1/3 बारिश व 1/3 पैदावार कम होगी। दूसरे साल 2/3 बारिश व 2/3 पैदावार कम होगी और तीसरे साल न कोई बारिश होगी और न कोई चीज़ ज़मीन से पैदा होगी। उस वक्त ''ला इलाहा इल्ललला‍ह, अल्लाहु अकबर और अल्हम्दुलिल्लाह'' का ज़िक्र लोगों की खुराक का काम करेगा।'' (इब्ने माजा–4077)

4. दज्जाल उस वक्त तक नहीं निकलेगा जब तक कि लोग उसके ज़िक्र से गाफ़िल न हो जाएं। यहा तक कि ख़तीब मिम्बर से उसका ज़िक्र करना तक छोड़ देगें। (अहमद–16788)

5. ''अरबों की तादाद काफ़ी कम हो जाएगी। लोग दज्जाल के डर से पहाड़ों में जा छिपेगें।'' (मुस्लिम–7393)

6. ''खुशहाली का फ़ित्ना एक ऐसे शख़्स के ज़रिये उठेगा जो खुद को मेरे अहले बैअत से बताएगा हालांकि उसका मुझसे कोई तअल्लुक न होगा। फिर लोग एक ऐसे शख़्स को अपना हाकिम बना लेगें जो इस लायक़ बिल्कुल न होगा। इसके बाद फ़ित्नों का दौर शुरु हो जाएगा। आदमी सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर हो जाएगा। ऐसे में जल्दी ही दज्जाल ज़ाहिर हो जाएगा।'' (अबु दाऊद 4242)

7. ''खुरुजे दज्जाल के वक्त मदीना बेहतरीन ज़मीन होगी। उसके हर सुराख़ पर फ़रिश्ता तैनात होगा जो दज्जाल को मदीना में दाख़िल होने से रोकेगा। ऐसे वक़्त मदीना में तीन ज़लज़ले आएगें और कोई मुनाफ़िक़ ख़्वाह मर्द हो या औरत ऐसा न होगा जो मदीना से निकल कर दज्जाल से जा न मिले। इनमें से ज्यादातर औरतें होगी। यह वह दिन होगा जब मदीना अपने मैल कुचैल को इस तरह निकाल देगा जैसे लुहार की भट्टी लोहे के मैल कुचैल को दूर कर देती है। दज्जाल के साथ 70 हज़ार यहूदी होगें। जिनमें से हर एक ने हरे रंग की रेशमी चादर, ताज व ज़ेवरात से सजी तलवार पहन रखी होगी।'' (अहमद 14158)

दज्जाल की जिस्मानी अलामात

वह छोटे क़द, मज़बूत जिस्म और बड़े सर वाला होगा। उसकी दोनों आंखें ऐबदार होंगी। दाई आंख अंगूर की तरह फूली हुई होगी और बांई आंख पर चमड़ा आया हुआ होगा। बाल घने व घुघराले होगें। सफ़ेद रंगत वाला होगा और उसकी दोनों आंखों के बीच 'काफिर' लिखा होगा।

तमीमदारी रजि. की 'दज्जाल व जस्सासा' वाली हदीस के

मुताबिक वह एक समुन्दरी जज़ीरे में क़ैद है। आप सल्ल. के ज़माने में मौजूद था। तमीमदारी रजि. व उनके साथियों ने उसे जज़ीरों में जकड़ा हुआ देखा था। क़यामत से पहले जब अल्लाह चाहेगा शदीद गुस्सा करने की वजह से उसकी जज़ीरे टूट जाएगी और वह क़ैद से निकल जाएगा।" (मुस्लिम–7386, इब्ने माजा–4077)

ज़मीन पर उसकी रफ्तार

"उसकी रफ्तार उस बारिश की तरह होगी जिसके पीछे हवा हो।" मतलब यह कि वह बहुत तेज़ी से ज़मीन के हर हिस्से में पहुंच जाएगा। वह ज़मीन में 40 रोज़ तक फिरेगा। उनमें का एक दिन एक साल की तरह, एक दिन एक महीने के बराबर और एक दिन एक हफ्ते के बराबर होगा। बाक़ी के दिन आम दिनों की तरह होगें। गधे पर सवार होगा, उसके दोनों कानों के बीच 40 हाथ का फ़ासला होगा, लोगों से कहेगा कि मैं तुम्हारा रब हूं हालाकिं वह एक आंख से काना होगा और तुम्हारा रब ऐसा नहीं है। उसकी दोनों आंखों के बीच काफ़िर लिखा होगा जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा। चाहे वह पढ़ा लिखा हो या अनपढ़। (अहमद–14158, मुस्लिम–7365, अबु दाऊद–4318)

"वह मशरिक़ की तरफ से आएगा। उसका इरादा मदीना में दाख़िल होने का होगा। मगर उहद पहाड़ के पीछे फ़रिश्ते उसे रोक कर उसका रुख़ शाम (सीरिया) की तरफ फैर देगें। (मुस्लिम 3351)

दज्जाल के फ़ित्ने

1. "उसके साथ जन्नत व जहन्नम होगी। उसकी आग असल में जन्नत होगी और उसकी जन्नत हक़ीकत में जहन्नम होगी।"

2. उसके साथ पानी और आग होगी। उसकी आग असल में ठण्डा पानी होगी और उसका पानी हक़ीकत में आग होगी। तुममे से जो कोई दज्जाल को पाए तो उसे चाहिए कि उसकी आग में कूद जाए क्योंकि वह ठण्डा मीठा पानी होगा।" (बुखारी–7130, मुस्लिम–7370)

3. "वह एक क़ौम के पास आएगा तो वह क़ौम उस पर ईमान ले आएगी। वह आसमान को हुक्म देगा तो वह बारिश बरसाना शुरु कर देगा। ज़मीन को हुक्म देगा तो वह पैदावार देना शुरु कर देगी। भेड़ बकरियां जब चर कर लौटेंगी तो उनके थन दूध से लबरेज होगें। फिर जब वह एक दूसरी क़ौम के पास जाएगा तो वह उस पर ईमान नहीं लाएगी। सुबह जब वह क़ौम अपने खेतों को देखेगी तो फसलें बर्बाद हो चुकी होंगी और ज़मीन बन्जर। वह उस बन्जर ज़मीन को हुक्म देगा तो ज़मीन से ख़ज़ाने निकल कर शहद की मक्खियों की तरह होकर उसके पीछे–पीछे चलेगें। (मुस्लिम 7373)

4. "दज्जाल जब एक देहाती से कहेगा कि अगर मैं तुम्हारे मर चुके मां–बाप को ज़िन्दा कर दूं तो क्या तुम मुझे अपना रब मान लोगे ? वह हामी भर लेगा तो दो शैतान उसके मां–बाप की शक्ल में उसके सामने आ जाएगें और कहेगें कि बेटा! इसका कहा मानो, यही तुमहारा रब है।" (इब्ने माजा–4077, सही अल जामेअ–7885)

" वह एक जवान को तलवार मार कर उसके दो टुकड़े कर देगा। फिर कहेगा कि मैं इसे ज़िन्दा कर दूंगा मगर यह मुझे अपना रब नहीं मानेगा। वह मुर्दा उसके कहने पर उठ खड़ा होगा। यह जवान से पूछेगा कि मेरा रब कौन है तो वह कहेगा कि मेरा रब अल्लाह है और तू अल्लाह का दुश्मन दज्जाल है।" (इब्ने माजा–4077)

अब सवाल यह है कि जिन लोगों की ज़िन्दगी में वह ज़ाहिर हो, वो उसके फित्ने से बचने के लिए क्या करें ?

फ़ित्ना ए दज्जाल से बचने के तरीक़े

1. दज्जाल से दूर रहे " जो कोई दज्जाल के बारे में सुने तो वह उससे दूर रहे।" (मुस्लिम 7395) "दज्जाल से भाग कर पहाड़ो में छुप जाएं।" (मुस्लिम 7395)

2. अल्लाह से मदद तलब करें–"जो शख़्स उसकी आग के फ़ित्ने में फंस जाए वह अल्लाह से मदद चाहे। (इब्ने माजा–4077)

3. अल्लाह के अस्मा व सिफ़ात का इल्म हासिल करे – "दज्जाल एक आंख से काना है और अल्लाह तआला हरगिज़ ऐसा नहीं है।" (बुख़ारी–7131)

4. सूरह क़हफ़ के शुरु की दस आयतों की तिलावत करें–"जो कोई सूरह कहफ़ की इब्तेदाई दस आयात याद कर लेगा वह दज्जाल के फ़ित्ने से महफूज रहेगा।" (मुस्लिम 1883)

5. हरमैन शरफैन में से किसी एक में पनाह ले। इसलिए कि "दज्जाल मक्का व मदीना में दाख़िल नहीं हो सकेगा।" (अहमद 11945 सही)

6. लोगों को दज्जाल से आगाह करते रहे–"दज्जाल उस वक्त तक नहीं निकलेगा जब तक कि लोग उसके ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हो जाएं।" (अहमद 16788)

7. इल्मे दीन हासिल करें–"जिसने दज्जाल से कहा कि हमारा रब अल्लाह है हम उसी पर भरोसा करते हैं और उसी की तरफ हम लौट कर जाएगें और तुझसे बचने के लिए हम अल्लाह ही की पनाह चाहते हैं तो ऐसे शख़्स पर दज्जाल का कोई असर नही चलेगा। (अहमद–हसन)

8. नमाज़ के आख़िर में दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगे। आखिरी तशहुद में सलाम फैरने से पहले यह दुआ करें–"अल्लाहुम्मा इन्नी आऊज़ुबिका मिन अज़ाबिल क़ब्रि व मिन अज़ाबिल जहन्नमा व मिन फित्नति महयाया व ममाति व मिन फ़ित्नति मसीहि दज्जाल "यानि ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे क़ब्र व जहन्नम के अज़ाब से, ज़िन्दगी व मौत के फित्ने से और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगता हूं। (मुस्लिम–1324, नाई–1309, इब्ने माजा–909, अबु दाऊद–983, बुखारी–1377, अहमद–7236)

दज्जाल का ख़ात्मा

दज्जाल जब ईसा अलैहि. को देखेगा तो इस तरह पिघलने लगेगा जैसे पानी में नमक। वह भागेगा मगर ईसा अलैहि. उसे बाब लुद्द (जो

फिलीस्तीन में है) के करीब जा पकड़ेगें और नेजा मार कर उसे मोत के घाट उतार देगें। फिर ईसा अलैहि. दज्जाल का नेज़े पर लगा हुआ खून लोगों को दिखाएगें। (मुस्लिम 7279 इब्ने माजा 4077)

दज्जाल का इन्कार करने वाले

माजी करीब में कुछ उलैमा ऐसे भी गुज़रे हैं जिन्होंने दज्जाल का इन्कार किया और इस मसअले में ख़ता कर गए। जैसे –

1. शैख़ मुहम्मद अब्दह की नज़र में दज्जाल की कोई हक़ीकत नहीं, यह सिर्फ खुराफ़ात है।
2. मुहम्मद फ़हीम – इनकी नज़र में दज्जाल से मुराद शर व फ़साद का फैलाव है।
3. किसी ने कहा दज्जाल ज़ाहिर तो होगा मगर उसके साथ फ़ित्ने और जन्नत जहन्नम नहीं होगें।
4. तो किसी की नज़र में दज्जाल वगैरह तो अफ़साने हैं।

इनमें से अक्सर का कहना है कि दज्जाल का ज़िक्र कुरआन में नहीं है। हालांकि इर्शादेबारी है "जिस रोज तुम्हारे रब की कुछ निशानियां आ जाएंगी तो जो शख़्स पहले से ईमान वाला न होगा। उस वक़्त उसका ईमान लाना कुछ फ़ायदा न देगा। (अनआम आयत 158) में दज्जाल का ज़िक्र है। जिसकी वज़ाहत इस हदीस से होती है। जब तीन चीजें ज़ाहिर हो जांएगी तो किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसे फ़ायदा न देगा जो पहले से मोमिन नहीं होगा।

1. खुरुजे दज्जाल 2. ख़रुजे दाब्बा (ज़मीन से एक बड़े जानवर का निकलना।) और 3. सूरज का मग़रिब से तुलूअ होना।" (मुस्लिम 398, तिर्मिजी 3072) आख़िर में यह जाल लें कि "शिर्के खफ़ी दज्जाल से ज़्यादा ख़तरनाक है।" (अहमद) साथ ही "गुमराह पेशवा (उलैमा) दज्जाल के फ़ित्ने से ज़्यादा ख़ोफ़नाक है। (अहमद, सिलसिला अहादीस सहीहा–1989) हज़रत उमर रजि. ने फ़रमाया था "ख़बरदार" तुम्हारे बाद कुछ ऐसे लोग आने वाले हैं जो रजम (संगसार) दज्जाल, शफ़ाअत और अज़ाबे कब्र का इनकर करेगें। वह इस बात का भी इन्कार करेगें कि अल्लाह एक क़ौम को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करेगा। हालांकि वोह जलकर कोयला हो चुके होगें। (अहमद) फित्नों वाली अहादीस को जानकर हम ना उम्मीद न हों बल्कि अपने ईमान में पुख्तगी लाएं और साबित क़दम रहें।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें फ़ित्ना ए दज्जाल से महफ़ूज रखे , हमारी ख़ताओं से दरगुज़र फरमाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन।

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649
दिनांक 19.04.14